

४२ निजीय रत्न विद्यालय निजीय पुस्तकालय दीक्षा विद्यालय

५४ ६

ASHA ARCHIVES 3405

१०० नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६५ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६५ ॥
॥ हेनव हेनवो प्राकं ॥ यत्र तत्त्वस्यैव नित्यं । दीक्षायां प्राकं
ननायं पाणकं दत्तं ॥ पुथमं स परी दीक्षां । द्वितीयं व व
एकीं दत्तं यै सर्वा विना नास्त्यैः । त्रितीयां हृद दीक्षया ॥
पञ्चम्यानां हितार्थं च । दीक्षा कर्मा पञ्चम्यानां सफळमिति

जितं पापं संचरति स हाप हं ॥ आयुः श्री का निसो रा
गंधं लक्ष्मी शुद्धिर्विवर्धनं । अष्टैश्वर्यं खचन त्वंदी कामा
ग्रल प्राप्नुयात् ॥ अथ पूर्वसिद्धि व स कुल कर्मादिकं कु
र्यात् ॥ आचार्य ऊह ऊहि नी प्रहृती न कुल कर्मा
दिकं कु र्यात् ॥ स्नाना दिन व फु हल जाना हल
नि खया य ॥ आ दो गं धा दि पूजा चरु र्थि त्व ॥ पुनः
ले

गले लक्ष्मी दिन व पीथ पूजा च का म य ॥ ॐ ह्रदव
ता आ नार क म न दि प पूजा च ॥ धूप दीप ॥ नेत्र य
॥ ऊप ॥ ह्रीं ॥ वाक् ॥ तर्पण ॥ नृकानक ॥ ॥ धन
लि गले लक्ष्मी दिन व पी ० पूजा या त डान ॥ धन लि हि
हा डी या डी ॥ ऊऊ मा न लि ष्य प नि पित काय ॥ धन
तर्पण ला य ॥ स्वस्तिक सत ॥ नि म्भक ना दि ॥ दीप ला

देव. म. १०८ ३४ द्वाकोस्वी आत्म जेने. आ मा भि जा मि को ले दि मि न भि सु समा न य म गु र स्व
 ग्वयदा ननयेमिधि रूपदेवे शि हो का समीप दहिने

रु न का ॥ स (म ना दि. प्र ति स्य गुरु पत्नी न. गुरुत्रा
 दिन. व न स्वा न वि य ॥ व लि थ य. सा कि. थ य. थ
 दि लिं त्वा य ॥ उ थ हा ई च ॥ ॐ ति प्र थ म दि व स वि
 धिः ॥ ॥ अ थ दि ती य दि व स ॥ ॐ हृ द व ता त्रा
 गारु क म न ए जा ॥ ए र्व व न ॥ ॥ अ थ ह ती य दि
 व स ॥ आ दो पा द प्र द्वा ल्य ॥ इ वी क्त न ॥ या मि. गुरु

आ मि त्या दि त्या
 मो मिने. म. १० मु का धि दी ४ आ म प्र या मि दे वे शि मे मि नी स्व गो र सह ॥ नि वि धि ति डि दी क्षा

आ मा हि म ज म ई ड ह रे ॥

आ मा हि ग मी त्या दि

ने व म ज थ व के

ग ल. लि ष्य. ता व प द प ॥ आ म कु न ॥ ० ॥ अ थ च
 को द्वा लं ॥ व लि ॥ अ र्घ पा त्र ॥ प्रि त लै ना च म्य ॥ अ या
 दि. पु ष्य ए ज न ॥ वा क्य ॥ य ज मा न स्य. स म य. व डि
 ह. नि र्वा ल स र्व धि का त. म कु प्र दान दी का ॥ वा क्य
 ॥ श्री स व ली. त्रै का ना. मा कं. लु या. उ हृ दू ला. जा
 सा न. वृ ष्ट क्क नै. का का ण. वृ न्दी से. सि दि नू म

आ वे ॥ मे १० मे १८ १ दी ४ आ म वि शो म आ दे व श्री गुरु म ध र्पि रा ॥ म पि दी क्षा प्र ना थ म ज सी न ह ता
 मा रु से गे हि गो. मु का १ दी ४ भ व ॥

॥ ॥ अथ चक्राङ्कनं ॥ पूर्वत्रयद्वय ॥ पश्चिमक
र्म ॥ उरुत्रयद्वय ॥ वीरकल्ल ॥ कुम्ह ॥ श्रीपात्र ॥ च
दुसल्ल ॥ नामाङ्कन ॥ नजामल्ल ॥ हिला ॥ श्रीख ॥
पंचामल्ल ॥ श्रीन्य ॥ कुम्ह ॥ कुम्हक ॥ सिन्धुमुद
॥ शसित्वा ३ ॥ नकुलकाष्ट ॥ नकुपत ॥ पंच ॥
प्रकुमात्रीस्त ॥ धूनी ॥ कुम्ह ॥ अङ्कन ॥ दलमुद्रा ॥

अथ चक्राङ्कनं ॥ अथदिलि आदिन^स कर्ता क्काय
पात्रा ॥ त्रिपांजलियाय ॥ सकलहि ॥ धूप ॥ दीप ॥ नेव
य ॥ आप ॥ कात्र ॥ विसर्जन ॥ स्वस्वस्तान्काय ॥
ऊपमाला ॥ धन ॥ ॥ लिगमर्चनी ॥ जानागमय
प्रीनजपलपंलिगमर्चनी सतय ॥ ॥ अथगुरुमू
र्तिपूजा ॥ पुष्पराजनं ॥ अथादि ॥ वाक् ॥ अस्तुति

ष्या क्षं समय वि नि ह नि र्बील सर्व धि का त म नु प्र
 दान का क्षी न वा सा गु तु मु र्ह य ॥ ^{पं दी प रा म} ॥ अ ख लु म लु
 ला का ल ॥ सि द्वि त म् ॥ गु तु पू र्वा रि मु र्व हि त्वा
 ॥ ॥ जि थः प ष्वि मा रि मु र्व ॥ अ थ गु तु पू र्वा ॥
 प्रि त्वा ता च म्य ॥ अ यदि ॥ वा य ॥ क लि क लु ख खा दि
 ॥ अ न वा सा गु तु मु र्ह य ०० द मा स्त न मः ॥ पु र्थ न मः ॥
 कलिकलुषकृतामैचराऽमार्गशऽमीभिर्जसकलकुलोलीज्ञानसौर्याथदाता ॥ त्रि दिवतलमेनूनां त्वजनेवा
 धेहस्त कुसुमजलफलोर्ध्वस्वाकुलार्कनमामि ॥ २

॥ ॥ पु न वा क् ॥ पा दार्घ न मः ॥ लि चा य क ॥ ॥
 पु न वा क् ॥ रु स्तार्घ न मः ॥ पू र्व व दार्घ प (थ ग् ॥
 च न द न ॥ सि नू न ॥ ज ह्ना प र्वा त ॥ पु ष्य ॥ वा क्का द न ॥
 ॥ पू र्ज न ॥ ने रु ह क्षी न वा सा गु र्ह य ३ ॥ ष जं ल न
 पू र्जा ॥ अ वा क् ॥ पु र्क क मु द्रा ॥ पू र्प दी प ने व थ ॥
 ज प ॥ ^अ स्वा हा ॥ १० ॥ पा त्रं ॥ ने अ धा ना दि ह्ना नं

प नानं प न नि लु यं क थि तं य न सृ पृ थं ना च न
 त स्य दं द नि तं य न त स्मे षी गु न व न मः ॥ अ ह्म न
 ति मि त्रा धा रं ज्ञा ना ऋ न ण ला क या । च कु त्रु मी ति
 तं य न त स्मे षी गु न व न मः ॥ ज्ञा न ण कि स मा तू रं
 त स्य मा ली वि रु धि तं । जु कि मु किं प्र दा ता नं गु त्रु व
 न यं नि वं ॥ गु त्रु वं क्षा गु त्रु वि ष्णु गु त्रु र्द वा म रु ष्व

नः ॥ गु त्रु न व ज ग त्सु र्वं त स्मे षी गु न व न मः ॥ गु त्रु गु
 त्रु त न ष्वे व य चा न्य गु त्रु ज्ञा त नः । गु त्रु ना त्मा स मा
 यं गु त्रु व न्द य थ नि वं ॥ मा र्ग मा र्ग प्र दा ता नं स सा
 न पा ण कु द नं ॥ आ दि म ध्वा व सा न च षी गु त्रु प्र ण मा
 म्प रं ॥ क र्म ध्वा न र्ध र्म ध्वा दी क्षा मा र्ग प्र वा ध नं ।
 अ ह्म न ज्ञा न स वा धं त स्मे षी गु न व न मः ॥ प न मा न

न दाता न संसा न कुरु पात्र गं । एवमुक्तं न त्राता न । न
स्तेष्वा गुत्र व न मः ॥ तीर्थ देव त्व मा ह त्वं । गुत्रुं प न म
देव तं । आ न न्द रु व नं नृ पं । क म स्व गुत्र व न मः ॥ च
गुर्व कं च गुर्वी हं पीता फं पीत वा स सं । सा क स्रुं च
पु क क ५५ न म क गुत्र व पादुकी ॥ गुत्रु र जाय वे गुत्रु
गुत्रु नृ पं स्रु हं । गुत्रु वाचा प्रसाद न । पि लु सि डि च जा

य न ॥ सफ न न्म क नं पा पं । सर्व वा धि विव र्जि तं । वृ क
क प्रिय वा लु स म का का ना । नु व र्जि तं ॥ १२ ॥ गुत्रु पा
दाद कं ग णं । गुत्रु मू लि स्रु द व तं । गुत्रु वाचा एव
स्वा णी गुत्रु वा र्क प नं षं प दं ॥ नि गुत्रु मु निः ॥ ॥
गुत्रु पादा र्घ दा तव्यं ॥ स्रु र्ज न नि का दा द न स्रु य या
ग हं कृ त्वा णी ख न की त्रा द का र्घ दी य न ॥ आ या दि

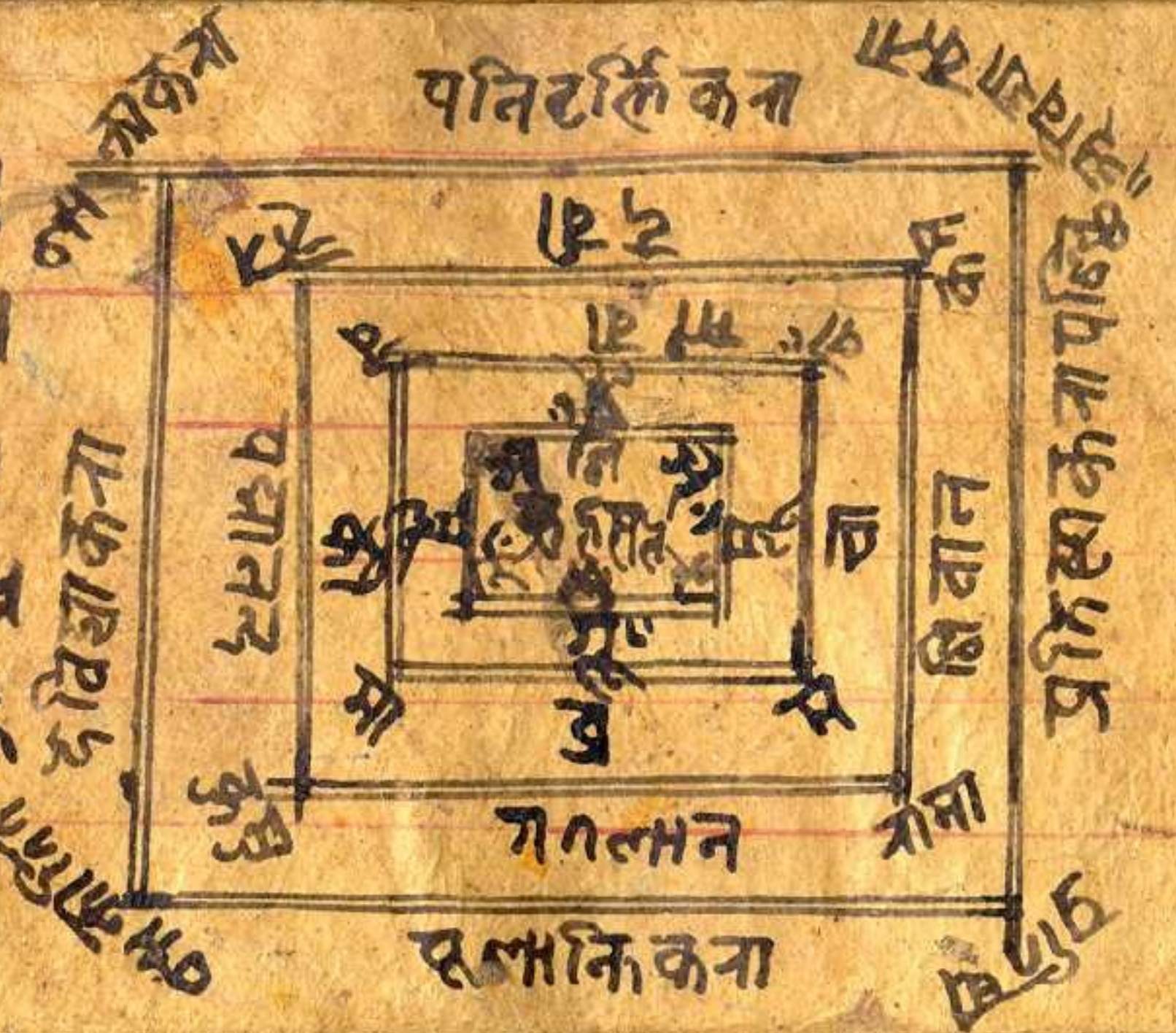
अर्चो जं देव देवेश पूर्ण धर्मवता दण्ड गुरुनाथ सत्पादनं प्रसीद परमेश्वर

सा स न कृत् ॥ वीरवताय स मादाय स पुष्प रुल चन्दनं ।
जानुषो धन श्री गत्वा गृहात्ता धीन माननमः ॥ ॥ अर्घी
यदवदवस्थादि ॥ ॥ पारितोस्तु अर्घयाय ॥ सुवर्णदक्षि
न्म ॥ अन्नसंकल्प ॥ अद्रगन्धदि पूजा ॥ ॐ नमो गुरुभू
र्हि पूजा विधिः ॥ ॥ नता गुरुनाथे गुरुभू मल्लाला चनं मांशिकादक
॥ नसा कनरुमि न पनं ॥ मनुः ॥ नैज किलि रविच

न लोमि
न मनुः
धनाः अर्घी

कार्क लयङ्गः रुद्र नृनाय पादकी ॥ विधा ३ ॥ गन्ध
वानि लप्रादली ॥ नैज श्री गुरुभू नमः ॥ अस्व लु म
लुलाका नमि त्यादिना ॥ ॐ गुरुभू मल्लाला यनमाननमः
॥ लपलंका नय ॥ रुद्र प्रमाल मल्लाली ॥ ॥ मधुकै
ट्ट मदासिर्ह निनासि वसुन्धना न द्वाष लम नार्थय
सिं वा मि गन्ध वानि ल ॥ त्व वला दयेतया वयेत

॥ म नुः ॥ नुं हं रुट् वज्र
 पञ्चनखा हा ॥ ॥
 वाक् ॥ सा धिता एधि
 वी चे वः लपिता गन्ध
 वानिला । पूर्वजन्म क
 र्मे जापैः दुः कर्तुं ह



कर्तुं तथा ॥ ॐ रुजन्म कर्तुं पापैः ॐ रुजन्म सुयन्तु कर्तुं
 विष्टिर्नै कर्म सु द्र लः जन्म जन्मान्म न प्रव । कन ए
 हा ॐ लिं त्वा ज्ञा सयत्क न च न स ॥ अख लु म लु ला व
 रि गुं गा न ए उ प्राम यत् । पु ष्य ॐ वि वि ध नं जा य न वि
 वि धा कु ल ॥ स म ये दी य न च वः न रु नु मि व सर्वदा ॥
 श्री गुरु म लु लाय नमः ॥ ॥ रु ल न प्रा क ली ॥ नुं ज कि

तिरविश काङ्क्ष लभयतुः अस्त्राय रुद्र ॥ ॥ ज व ला थ
थेन या व थे ल ॥ मनु ॥ नै ज व ल म कु ल कु ल म च की
हं रुद्र स्वाहा ॥ श्री सै म्व ली स्तु प्र न ल प नै ॥ अं अन
कमल लाय नमः ॥ ॥ म लु ल म ध्व पु र्ण नि धा प य
त ॥ ॥ पीत रु ध्ने न म लु लं का ज य त् ॥ १२ नै ४ द
धे स चा क १ ॥ म लु ल प ति ॥ अ क्त ॥ पु ष्य त ॥ द थ स

न व स न य चून गु नु या पा ङ्कि सा च क ॥ च न्द ना क
त ॥ य क्षा प वी त ॥ ताम्बू ल ॥ रु ल ॥ वा ङ्का द ना दि ए
ऊ नै का ज य त् ॥ नै ज रु र न वा त्मा म्बू र्ण य ३ ॥ त्रि धा
ध ३ ॥ षष्ठ ग ॥ ॥ पि धे स मै ट पू जा ॥ नै ज सा ङ्कि क
ला ये २ ॥ पू र्व ॥ ॥ नै ज वि था क ला ये २ ॥ द कि ल ॥
॥ नै ज नि र्द लि क ला ये २ ॥ प ङ्की म ॥ ॥ नै ज प्र

निष्ठा कलाये २॥ उरु ॥ नुँ जं ह्य का नि क क लाये
२॥ आत्मा ॥ ॥ नुँ जं ह्य का क लाये २॥ नुँ जं ने अत्य ॥
॥ नुँ जं नं अ वि द्या क लाये २॥ वायुव्य ॥ ॥ नुँ जं अ
प्र ति ष्य क लाये २॥ नुँ ह्य न्यौ ॥ ॥ तत्ता र्थं त न न व
ना थ ॥ नुँ ग ग ल न न द व ॥ ए र्ध ॥ ॥ नुँ कु मु दान
न द व ३॥ आत्मा ॥ ॥ नुँ प सान न द व ३॥ द कि ल

॥ ॥ नुँ हे र वा न न द व ३॥ अत्य ॥ ॥ नुँ द वा न न द व
३॥ प र्ध म ॥ ॥ नुँ क म लान न द व ३॥ वायुव्य ॥ ॥ नुँ वि
वान न द व ३॥ उरु ॥ ॥ नुँ जामान न द व ३॥ नुँ ह्य न्यौ
॥ ॥ नुँ कु म्पान न द व ३॥ मत्त ॥ पुनः त द ल क न र्ज ॥ नुँ
ग ग ल लो क ३॥ ए र्ध ॥ ॥ नुँ ह्य स्व र्गी लो क ३॥ द कि
ल ॥ ॥ नुँ पू प व न लो क ३॥ प र्ध म ॥ ॥ नुँ पू म र्ध

लाकर ॥ उरु ॥ ॥ त्रैलोक्य नागलाकर ॥ मध्य ॥ ॥ न
नखनल ॥ ब्रह्मादि ॥ त्रैलोक्य लि ॥ ॥ ॥
त्रैमादुष्यनी ॥ आन ॥ ॥ त्रैकोमानी ॥ दक्षिण ॥
॥ त्रैवेष्टुवी ॥ त्रैमस ॥ ॥ त्रैवानाहि ॥ पश्चिम ॥
त्रैत्रुली ॥ वायु ॥ ॥ त्रैचामुखी ॥ उरु ॥ ॥
त्रैमहालक्ष्मी ॥ ॥ ॥ त्रैदखकन ॥ त्रैनमी

रगवनीरुक्मलायेकीं ब्रीहदयाय ॥ पूर्व ॥ ॥ त्रै
क्षीं कुड्डीकाये ॥ दक्षिण ॥ ॥ ॥ ॥ त्रैवर्चल लिख
॥ पश्चिम ॥ ॥ ॥ त्रैचामुखी ॥ उरु ॥
॥ ॥ किलीरविच ॥ आन ॥ ॥ त्रैमकुलएऊ
यत ॥ ॥ मध्य ॥ त्रैमकुल ॥ आन नदवाकी हैनवा
नन्देवीनाधिषनय ॥ ॥ ॥ त्रैमकुल ॥ एदानका

श्री

य३॥ गि३॥ षष्ठं ग६॥ ॥ जं इ स व लि वि थ ॥ ने सूर्य
मं लु लाय ३॥ ने च नु मं लु लाय ३॥ ने व क्रि मं लु लाय ३॥ ने
अ खं लु म लु लाय ३॥ ने गु नु मं लु लाय ३॥ ला क म ला व लि
॥ आ वा रु ना दि च न्द ना दि य क्षी प वी त पु ष वा क्का द न रु
ल ता म्ब ल त नू लू लू प दी प ने व श अ लि व लि स

हि तं सा प स्क न ती सर्व सर्व स रू जि ता स नु लू ला दि
सू प्री ता व न दा रु व नु ॥ ॥ ला ॥ अ ख लु म लु ला का
नं ला दि ॥ ॥ अ ना दि ज न्म संप्रा प्ते क र्म क द वि वा रु
कं । ह्ना ना न ल स मा प तं श्री गु त्रुं प्र न मा म्ब रुं ॥ ॥ इ
प्रं क त्रा जि ता दि क्षी क र्म क ला म ल त्र य । अ क श्च ह्ना न
स हा वं न ह्मे श्री गु त्रु व न मः ॥ ॥ मा रु ग रु व न घा

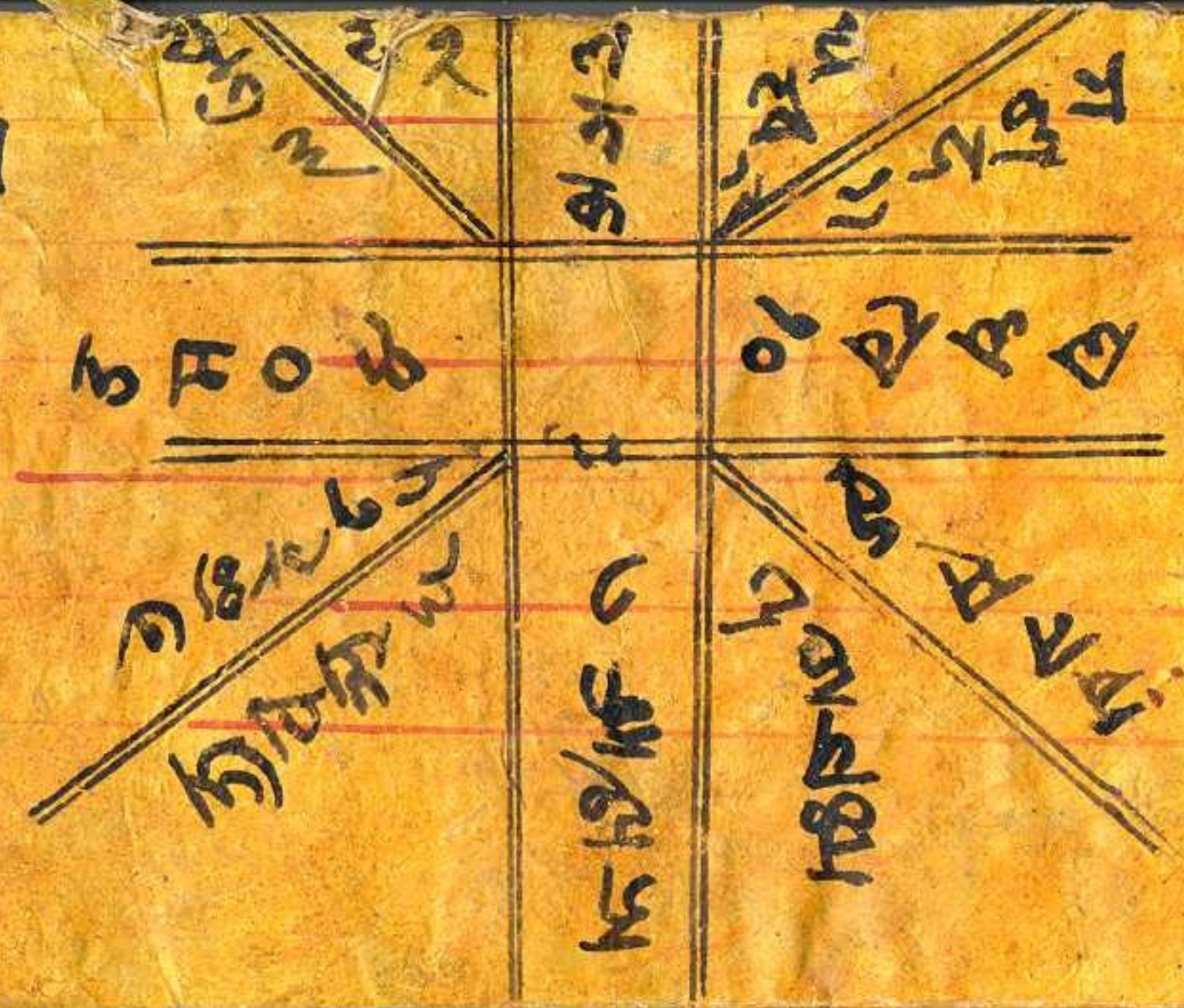
अ. वि. वीनीयन साधितं । पुनः संजीवितं जन. न स्याद
न मा म्यहं ॥ ॥ अस्य स्मृतं न मा प्र. त. आह सिद्धिः प्रवर्त
न । दिव्य हानं दिव्य का सं. न से श्री गुरु वन मः ॥ ॥ कर्म
न म न सा वा चा. गुरु ल. ह कि व स्या । वीनीयन प्र. ल म र्थ
च. स. गुरु ल. नि व द य त् ॥ गुरु द वा म हा द वा. गुरु द वा म
ह व य तः । गुरु वे व वि नू पा क. सर्व द वा स जा गुरुः प्र स के

व प ना क च. स. त्वा न त्या ह का द यं । मु च न न ह ल
क्रि ख्यः सु क र्थ मा नु त्वाः गुरुः ॥ नि व दि त मि द ना
थ. जा व जी व वी नी य न के । न दे व ह ग वा न्ना थ. प्रा ल क
व प व हि व य नाः ॥ गुरुं गुरु न न वे व. य चा न्ध गुरु ज्ञा म
नः ॥ अन्य य क मि का ऊ स. न वां पा दं न मा म्य हं ॥ पा द पा लु प्र सा
द न. जा य न बु धि नु ल. ॥ त्रे ला क द र्जि न य न. न से श्री गुरु
क माः

न वतनमः॥ गुत्र वृक्षा गुत्र विष्णुः गुत्र दवमरुध्वनः॥ गुत्र
न वज्रसर्वं॥ न सोऽपि गुनवतनमः॥ अत्र गन्धादि॥ वाक्॥
॥ नोऽपि सर्वं लोकादवतनमि १२ गते कृत्वा दूर्वाकृत
पथारि नर्घं दद्यात्॥ वात्राह कल्प॥ मासन कृत्॥ वाक्॥
जानुह्यो धनलीं कृत्वा॥ ॥ अत्र सप्तत्रिंशत्क विधानां॥ सम
यः विधिः॥ निर्वर्तितः सर्वविधाने सकृत् प्रदानदीक्षाः॥ श्री

न वात्सा गुत्र मुर्त्यत्र गन्धपुष्पकूपः॥ दिपः॥ यक्षाप
वीतसिंदूनां जनरुलः॥ नेवयत्र तिरुल्लुवा क्कदनसा
पस्कृतलोऽपि गुत्र मल्लाय सर्वसर्वसंपूर्जिताय गुरु
महं प्रदद॥ अर्घ्यं ददवदवद॥ ॥ गुत्र मु
खे विषयः ददवद॥ गुत्र रुक्मसमर्पणी॥ नैऋतीं सोऽपि द
मर्ष्य गुरुल्लुवा॥ नोऽपि अर्घ्यमुत्तं कृत्वा॥ सा प्रैः

कलारुचक्रध॥



नायक	खंडि १४ कु	काठ का पत्र ४
पानायक	जी नारु ५ कं	काठ का पत्र १३
धुनि. पवास. नासा क		विहिवरु रुं ४ कं
गुगुल	चतुसु म	कर्लपताप
ऊऊमका पु ३००	नक चन्दन	पंचपताप
गाल. मालको. श्री खं लु		कवी. कवी मारु

अइवालपी. ननुपत व्या अं ४ इ १४ कु. वीत्रकलस
 सहेपान मालको. ते तुन सकया. नऊचूनता ३
 पंचनंगी का पत्र ३॥. न्य घट. क फ्रांजिन. धनि.
 सिंधु मालको. पंचामृत. कुल कुंर. क नष्टी गी. मालाजप.
 अकत कु १ कं. कायराय मालको. द लुखयन.
 नवस ११४ कं. मा कसित. काथयात्र. कापतापा १

जागपट ॥ रु लू लू लू द को ॥ बाबा माल की ॥ जहा पाइ का रु ३
वमु सु १ पिनां वन ॥ गुनुद को ॥ झाक पात ना १ ॥ लू रू १८
॥ लू लू माल की ॥ पुजा पात २ ॥ नायु पात ना १ ॥ लुपल रु ३
पा १ श्री सिऊ पु ॥ इयु कं २ कनि ॥ हासि लाक २ कं ॥ जहा पल रु ३
पंच सु १ ॥ १ ॥ कूमा नी सु १ ॥ १ ॥ दि हि मा ल की ॥
१ क ह हि मा ल की ॥ न व न ल रु १ ॥ नु पा दु का रु ३

नु पात ३ थ दि ल ॥ सं व १ ॥ ३ ॥ कामु क नं ६
नु पात ३ मं लु ल ॥ श्री १ ॥ ३ ॥ सुं रू पा ३ न पा गु
वा ना १ ॥ २ ॥ मं च पु ६ ॥ का पि थि ए जा जी नं माल की
॥ ला ला च माल की ॥ मु क नं पा २ ॥ का ॥ च ना मा रु कू य माल की
चा कु मा रु माल की ॥ कू गु कू पा त सा मा माल की ॥ व मु माल की
द कि ल माल की ॥ क र्म स १ ॥ ल का स्या त ॥ ध नि नं १ ॥ का माल

१ दीक्षा दंढा उ कि थं व लि वि वि धन ॥ लं ख न हा य ॥ ऊः अ
स्त्राय रुट् ॥ जा पु चा वा य ज ॥ पु नः वा य ज ॥ पु या न ल स लं
ख न वा य ॥ वि दु मि को ल चा क ॥ च रु को ल चा य ॥ लं ख वि
य म नु ॥ उं ना णा खः स्वा हा ॥ ए र्व ॥ उं क क ला खः स्वा हा ॥
म ॥ पु नः लं ख वि य म नु ॥ उं रु ता य वि वि धि का ला य
रु त दि व्या क रि क का ॥ पा ता ल सू त वा सि न्य रु न स्यं रु लि

वा रु या ॥ उं ऊीं सर्व वि धि क त लः सर्व रु त ला व लिं ग रु
र स्वा हा ॥ पु नः जा क्त वा स वि य म नु ॥ श्री गु र व आ चा र्य
०० दं ने व यं स्वा हा ॥ पु नः जा क्त स धि य म नु ॥ उं ऊीं श्रीं
कुं को ॥ ५५ १० अ मृत म य रु ल ला ल प ॥ ॥ लं ख क्त रु
लु ग य ॥ उं ऊीं वि श्वा न स्वा य स्वा हा ॥ पंच ग्रा स का य म नु ॥
उं ऊं प्रा न्म य स्वा हा ॥ उं ऊं अ पा ना य स्वा हा ॥ उं ऊं व्या ना

य स्वाहा ॥ ॐ हूं उ दानाय स्वाहा ॥ ॐ हूं समानाय स्वाहा ॥

ॐ नि नित्य व लि जा वि य वि धिः ॥ ॥ ॥ ॥

अथ सिद्धि लक्ष्मी रूप उग्र चण्डा कृतिः ॥ ॥ या या रा भां क न स्य रि पू न क म ध न भां द व वा र्श न स्य या या
रा वा यू र्श ना न ग धि वि क न ल ल क्ष ल ल क्षा कि रि नो या या रा वा घ ह स द क्षा त थ न न थ ना व ल स्या न
का ल ॥ सा या रा सि धि या रा ह व नू म न गृ ह पू र षो ग्रा दि ल क्ष्मी ॥ ॥

सो कल कुंज पूरु मल निवर्ति पात्र कुभारि
सति यय वति यत्र
लिङ्ग मूर्त्ति

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥

देव्याः आमंत्रितासि कोलेशी निर्विघ्नेन समाप्तये गुरुस्वरूपा
देवेशी दीक्षाशुभं प्रदेहि मे ॥ ॥ गुरुर्याः आमंत्रिता मया देव श्री
गुरुं मंत्ररूपिणं मयि दीक्षाप्रदानार्थं आयाहि यत्तम एतले
योगिनीया आमंत्रयामि देवेशि योगिनी त्वगणैस्तह
देवे

निर्विघ्नं सिद्धिदिक्षार्थं अत्र संनिहितो भव ॥ ॥

